पर्यावरण संरक्षण में विविध सहायक तत्वों की नई सदी में भूमिका

डॉ0 वीरेन्द सिंह यादव,
एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

प्रकृति की व्यवस्था के अनुरूप संतुलन ही पर्यावरण है। मानव, पशु, पेड़–पौधे, वायु, जल, जमीन ही पर्यावरण का निर्माण करते हैं। प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग को लेकर बढ़ता असंतुलन ही पर्यावरण संकट के रूप में आज उभर रहा है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि वृक्षाच्छादित क्षेत्र वातावरण के लिए फेंफड़े का कार्य करते हैं एवं प्रदूषण उत्सर्जनों का अवशोषण करते हुए जीवन के लिए अपरिहार्य रूप से आवश्यक ऑक्सीजन का उत्पादन करते हैं। आज वनों का अभाव राष्ट्र के पर्यावरण संतुलन के लिए भयावह स्थिति का निर्माण कर रहा है। यह निर्विवाद सत्य है कि वनों की सुरक्षा एवं विकास में जनभागीदारी की महती भूमिका है। यह एक चिंता की बात है कि विकास और आबादी के विस्तार के साथ मनुष्य का प्रकृति से सामंजस्य टूटता जा रहा है।

प्रदूषण कारक पदार्थ(पाल्यूटैण्ट) से तात्पर्य उन पदार्थों से है जो गलत स्थान में गलत समय पर और गलत मात्रा में विद्यमान रहते हैं। यदि इन पदार्थों को ठीक जगह पर, ठीक समय पर और ठीक मात्रा में किसी प्रक्रिया द्वारा रहने दिया जाए तो परिवेश को स्वच्छ एवं निर्मल बनाया जा सकता है। तो, आइए इसी परिप्रेक्ष्य में हम देखें कि आम आदमी पर्यावरण स्वच्छता अभियान में क्या योगदान दे सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन और इसके साथ ही आधुनिक उपभोगवादी सभ्यता के नाम पर अंधी दौड़ ने आज मानव को उस स्थान पर पहुँचा दिया है जहाँ पर संसार को जीत लेने के बाद भी ऐसा लगता है कि वह जीवन से हार सा रहा है। सारी सुख–सुविधाओं और संसाधनों की उपलब्धता के बाद भी आज इंसान परेशान है, उदास है, मानसिक तनावों से त्रस्त है। आदमी की आज सबसे बड़ी समस्या उसका अकेलापन है। जनसंख्या लगातार बढ़ने से, हर तरफ भीड़ बढ़ रही है, जाम लग रहे हैं पर व्यक्ति दिन–प्रतिदिन अकेला होता जा रहा है। यह आज के मानव की हकीकत है। बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं ने उसे अकेला रहने के लिए विवश कर दिया है अथाह धन–दौलत, वैभव, यश, और शोहरत प्राप्त करने की जिज्ञासा से मानव अकेला होता जा रहा है। मानव का अकेला रहने और अकेला चलने का निर्णय उसने शायद अपने व्यक्तिगत हित में लिया है। इस औद्योगिक व्यापारिक सभ्यता में व्यक्ति के संबध अब निजी न रह कर कामकाजी बन गये हैं। कार्ल मार्क्स ने लिखा है कि ''मुद्रा के लेन–देन वाले सम्बन्ध बाकी सम्बन्धों का स्थान लेने लगते हैं।''

तकनीकी विकास के युग में मनुष्य प्रकृति का विजेता बनकर सभ्यता के शिखर पर खड़ा होने का दावा करता है परन्तु मौलिक विकास के साथ ही प्रदूषण से मनुष्य ही नहीं वरन् पेड़–पौधे, पशु –पक्षी, और जानवर भी प्रभावित होते हैं। पर्यावरणविदों एवं इस विषय के जानकारों का मानना है कि मोटरकारों तथा अन्य पेट्रोल–डीजल के वाहनों के धुओं में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो सूर्य के प्रभाव से जहरीले तत्वों में बदल जाते हैं। यह जहरीले तत्व हमारी फसल पेड़–पौधों पर अपना घातक प्रभाव छोड़ते हैं। कच्ची धातु के कारखानों से इतनी मात्रा में सिल्वर ड्राई

ऑक्सीजन पैदा होती है जो हजारों एकड़ जंगलों को नष्ट कर डालती है।

पर्यावरण का निर्माण हमारे चारों ओर विद्यमान जैविक एवं अजैविक पदार्थों से होता है। इन पदार्थों में पारस्परिक संबंध एवं सन्तुलन होता है, जिसके परिणाम स्वरूप एक स्वच्छ, संतुलित, एवं सुसंगठित पर्यावरण का निर्माण होता है। पर्यावरणीय घटकों के आपसी सामंजस्य के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जीवन की आाधारशिला मजबूत है। पृथ्वी के समस्त जीवधारी पौधों पर आश्रित हैं। पौधों में ही एक मात्र ऐसा गुण पाया जाता है कि वह सौर ऊर्जा उत्पन्न करके प्रकाश संश्लेषण की रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन बनाते हैं एवं प्राणदायक वायु द्वारा निर्मित भोजन एवं वायु से जीवधारी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

वर्तमान पर्यावरणीय स्थिति को देखते हुए न्यूटन का तीसरा सिद्धान्त चरितार्थ होता नजर आ रहा है। प्रकृति भी अपनी प्रतिक्रिया देने को विवश हो रही है। पश्चिम बंगाल में आइला का आना इसकी बानगी है। इससे पहले भी सुनामी से भी सामना हो चुका है। जाहिर है प्रकृति अब मानवकृत जबरई को नई झेल पा रही है। पृथ्वी मनुष्य के भौतिकवादी लाइफ स्टाइल का बोझ नहीं उठा पा रही विकास की मैराथन रैस में प्रकृति इस रेस के एथलीटों द्वारा रौंदी जा रही है। नतीजन चक्रवाती तूफान सुंदरवन में देखते–देखते सपनों का आशियाना समुद्र की रेत की तरह ढह जाती है तबाही का मंजर। मौत का मरघटा प्रकृति के विनाश का यह सिलसिला ऐसे नहीं थमने वाला। महज भाषण और शोक व्यक्त करने से दर्द कम नहीं होने वाला। यह लीला समाप्त नहीं होने वाली। पहले दक्षिण में सुनामी, फिर पूरब में आइला चक्रवाती तूफान। अब बारी किसकी। उत्तर की या पश्चिम की। स्पष्ट है कि अब मैदानी क्षेत्र में प्राकृतिक आपदा आने की बारी है। पर इसकी फिक्र किसको है। अक्सर आपदा के आने पर पर्यावरण संरक्षण का झूला डोलता है। इस विकास की आंधी में झूले की रस्सी टूट जाती है। पर्यावरण बचाओ आंदोलन के बैनर तंबू विकास के तूफान में उखड़ जाते हैं।

विकास के साथ–साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन अति विपरीत प्रभाव पड़े तो उस विकास का कोई मूल्य नहीं होता । यदि विकास आवश्यक है तो पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डालने वाले कारकों को भी दूर करना आवश्यक है। पर्यावरणीय मुद्दों को आर्थिक विकास नीति के साथ इसलिए जोड़ा गया है ताकि दोनों का विकास हो और पर्यावरण संतुलित रहे।

पश्चिम की औद्योगिक एवं आर्थिक विकास की सोचने की प्रकृति ने जो निर्मम दोहन – शोषण किया है, पर्यावरण संकट की वर्तमान स्थिति इसी का गम्भीर परिणाम है। ऊर्जा के लिए कोयला, लकड़ी, पानी, पेट्रोल–डीजल का अंधाधुन्ध प्रयोग होना भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। जो बज चुकी है। आने वाली पीढ़ी को शायद ये चीजे हम संग्रहालय में रखकर दिखायेंगें।

पर्यावरण संतुलन के अनेक भौतिकवादी प्रयास तब तक निष्प्रभावी होंगे, जब तक प्रकृति के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव जागृत नहीं होगा। मनुष्य जब तक अपने व्यक्तिगत ऋण के शब्दों में दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन नहीं करता तब तक वर्तमान पर्यावरण –संकट के समाधान के बारे मे सोचना सिर्फ और सिर्फ एक बिडंबना और मुंगेरीलाल का सपना ही है।

वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था ने जीवन को जटिल बनाया है आदमी को आदमी से अलग किया है। वरना क्या कारण है कि विलक्षण, प्रतिभाशाली और कुशाग्र समझे जाने वाले वैज्ञानिक, इंजीनियर और डाक्टरों द्वारा किये जाने वाला शोध कार्यों से आम आदमी को लाभ पहुँचाने के स्थान पर हानि ही अधिक पहुँचा रहा

है। आज इन्हीं शिक्षित लोगों के शोध कार्यो के कारण आम आदमी और वह स्वयं भीषण संकट में आखिर क्यों है, क्या वर्तमान की आधुनिक शिक्षा प्रणाली इसका हल तलाश रही है। जंगल गायब हो रहे हैं समुद्र, नदी, पर्वत सभी प्रदूषित हैं, पेय जल का संकट बढ़ रहा है, पर्यावरण इतना विषाक्त बना दिया गया है कि उसकी भरपायी अब सम्भव नहीं दिखाई देती, दुनिया के दिन–प्रतिदिन नये कीर्तिमानों के बावजूद आदमी भूखा मर रहा है। पर्यावरण की समस्या दिन–प्रतिदिन विकट रूप धारण करती जा रही है। इन सभी के समाधान निकालने के प्रयास असफल हो रहे हैं। इससे इतना तो निश्चित ही है कि हमारे आधुनिक डिग्री धारी वैज्ञानिक, प्रबन्धक और अर्थशास्त्री इनका हल खोज पाने में सक्षम नहीं दिखाई दे रहे। शिक्षा सदा से संस्कारित, सुव्यवस्थिति और सुरक्षित जीवन जीने का मार्ग प्रशक्त करती रही है, पर आज की शिक्षा से यह सम्भव नहीं हो पा रहा है। आदमी–आदमी से बचकर चलना चाहता है। आदमी अपनी सारी ऊर्जा और अर्जित ज्ञान आदमी पर कैसे शासन किया जाए इस बात पर ही वर्तमान मे अधिक लगा रहा है।

आज पर्यावरण का प्रश्न हमारी पीढ़ी के लिए एक नई चुनौती के रूप में सामने आ खड़ा हुआ है। इस चुनौती से समूची मानव जाति और इस ग्रह पर मौजूद सभी जीवों यथा पेड़ पौधों के जीवित रहने अथवा नष्ट हो जाने का प्रश्न जुड़ा हुआ है।प्रकृति से खिलवाड़ के घातक परिणाम अब सामने आ रहे हैं। प्राकृतिक संतुलन पूरी तरह से बिगड़ चुका है और सौर मंडल गरम हवाओं की चपेट में है। धरती की सतह अब ज्यादा गरम हो रही है। और इससे जलवायु परिवर्तन की गरम आंधीचल रही है। इस स्थितियों को देखते हुए अगर वक्त रहते बचाव की नीतियां न बनीं और ईमानदारी से कार्य न हुआ तो इस आंधी में मानव अस्तित्व के गुम होने में देरी नहीं लगेगी। यही कारण है कि वैज्ञानिकों ने अब चेतावनी दे दी है। तो वह दिन देर नहीं जब पृथ्वी पर इंसान के लिए सांस लेना भी दूभर हो जाएगा।

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की एक ज्वलन्त समस्या है, जिसका जनक स्वंय मानव है। सभी प्रकार के जीव–जंतुओं तथा वनस्पतियों के लिए जल अति आवश्यक है, प्रदूषण के मुख्य श्रोत घरेलू मूलमूत्र, उर्वरक एवं कीटनाशक पदार्थ हैं। घरेलू कूड़ा–करकट, सीवेज पाइप, कारखानों से निकले गंदे अवशेष पदार्थ तथा कीटनाशक पदार्थ जैसे डी0डी0टी0, कार्बनिक फासफेट कार्बन और क्लोरीन युक्त पदार्थों का जल में विलय होने से जल प्रदूषित हो जाता है। दूषित जल का दुष्प्रभाव जलीय जीवों पर भी पड़ता है। अवशिष्ट पदार्थों के नदी जल में मिलने से जल में ऑक्सीजन की मात्रा घट जाती है तथा सल्फेट नाइट्रेट एवं क्लोराइड आदि की मात्रा बढ़ जाती है तथा सल्फेट नाइट्रेट एवं क्लोराइड आदि की मात्रा बढ़ जाती है। इससे जलीय जन्तुओं एवं पादप के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त पर्यावरणीय प्रदूषकों में रेडियोधर्मी प्रदूषण या नाभिकीय प्रदूषण सर्वाधिक हानिकारक एवं खतरनाक है। क्योंकि इसका दुष्प्रभाव दूरगामी होता है तथा जल स्थल एवं वायु मंडल का पर्यावरण प्रदूषित होता है। नाभिकीय विस्फोट के द्वारा इलेक्ट्रान, प्रोट्रान एवं न्यूट्रान के साथ अल्फा, बीटा एवं गामा किरणों के कण प्रवाहित होते हैं। रेडियोधर्मी प्रदूषण नाभिकीय अस्त्रों के विस्फोट से अधिक होता है। परमाणु बमों का परीक्षण, विस्फोट तथा परमाणु विद्युत गृहों के अवशिष्ट द्वारा रेडियोधर्मी पदार्थ फैलाते हैं। रेडियोधर्मी प्रदूषण के कारण मनुष्य के आनुवांशिक लक्षणों के परिवर्तन,

गर्भाशय में शिशुओं की मृत्यु, नवजात शिशुओं के अपंग पोलियोग्रस्त या विकलांग हो जाने सम्बन्धी बीमारियाँ बढ़ जाती हैं।

देश के महानगरों में वातानुकूलित एवं आधुनिक गगनचुम्बी इमारतों में काम करना भी प्रदूषण रहित नहीं हैं। इन इमारतों में सबसे अधिक प्रदूषण विद्युत चुम्बकीय तरंगों का होता है। ये तरंगें कामकाज में इस्तेमाल बिजली की मशीनों से पैदा होती हैं। इनमें सबसे अधिक प्रदूषणयुक्त कंप्यूटर, वातानुकूलन यंत्र और फोटो कापी मशीन पाये जाते हैं। उच्च वोल्टेज के कारण इन मशीनों के इर्द–गिर्द एक विद्युत चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। इस क्षेत्र की सीमा में कार्य करता हुआ व्यक्ति अदृश्य प्रदूषण की चपेट में आ जाता है। परिणामतः रक्त कैंसर और आमाशय का कैंसर पनप सकता है। विद्युत चुंबकीय क्षेत्र में बैठकर काम करने वालों को सिरदर्द की आम शिकायत रहती है।

जलवायु परिवर्तन की चुनौती से मुकाबले में हमारे पास इच्छाशक्ति की नहीं, बल्कि संसाधनों की कमी है। अनुकूलन की चुनौती से मुकाबले में भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद का दो से ढाई फीसदी तक खर्च कर रहा है और इसके लिए विदेश से कोई भरपाई भी नहीं हैं। हम विदेशी मदद के सहारे जलवायु परिवर्तन के खिलाफ अपनी लड़ाई नहीं लड़ना चाहते हैं, लेकिन इतना जरूर है कि यदि हमसे रफ्तार बढ़ाने की अपेक्षा की जाती है तो मदद के लिए हमारी उम्मीद को नाजायज नहीं कहा जा सकता। दुनिया को यह भी समझना होगा कि भारत बाध्यताओं का बोझ उठाने की स्थिति में भी नहीं हैं, क्योंकि अब भी हमारी बहुत बड़ी आबादी गरीबी रेखा के नीचे है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मौर्य एस0डी0 (2006) : संसाधन एवं पर्यावरण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- नेगी,पी0 एस0 (200) : पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेषन, मेरठ।
- डब्लू सी0वाल्टन (1970) : ग्राउण्ड वाटर रिसोर्स इवेल्यूषन, एम0पी0 ग्रोव हील, न्यूयार्क, पृष्ठ 664।
- सिंह डा0 काषीनाथ सिंह, डा0 जगदीष सिंह (1997): आर्थिक भूगोल के मूल तत्व।
- मिश्र,डा0डी0के (2004) : जनसंख्या, पर्यारण एवं विकास,ए0पी0एच0 पब्लिषिंग कार्पोरेषन, नई दिल्ली।
- सिंह, रवीन्द्र (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।